सामवेद

वैदिक संहिताओं में सामवेद का महत्व विस्तृत माना जाता है। बृहत् देवता का कहना है कि जो कोई 'साम' को जानता है, वही वेद के रहस्य को जानता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं सामवेद को अपना स्वरूप बताया है–

'वेदानाम् सामवेदोऽस्मि'

सामवेद को जाने बिना वेदों के रहस्य को जानना संभव नहीं। सामवेद का अवतरण आदित्य ऋषि पर माना जाता है। 'सामन्' का वास्तविक अर्थ है गान। इसको दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है। ऋग्वेद के मंत्र जब किसी विशिष्ट पद्धति से गाए जाते हैं तो उसको साम कहते हैं। यहां 'सा' का अर्थ है – 'ऋक्' और 'अम्' का अर्थ है – गीति। साम संहिता में गेय मन्त्रों का संकलन है। यज्ञ के समय उद्गाता नामक ऋत्विज देवता के स्तुतिपरक मंत्रों को आवश्यकता अनुसार विभिन्न स्वरों में गाता है। जैमिनीय सूत्र के अनुसार गीति को ही 'साम' संज्ञा दी गई है। सामवेद में उपासना की प्रधानता है। इसमें प्रायः उपासना–परक मंत्र दिखाई देते हैं। इसमें सविता, अग्नि, इन्द्र आदि से संबंधित मंत्रों में उपासना की गई है। स्पष्ट है कि 'साम' शब्द से अभिप्राय उस गान से है जहां भिन्न–भिन्न स्वर ऋचाओं पर गाए जाते हैं। इस प्रकार साम संहिता सामयोनि ऋचाओं का संग्रह मात्र है।

ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में भी साम की प्रशस्त प्रशंसा की गई मिलती है। साहित्यिक रूप में सामवेद का कोई महत्व नहीं है क्योंकि इसका अपना कोई विषय नहीं है। केवल 75 मंत्रों को छोड़कर बाकी ऋग्वेद में मिलते हैं। ऋग्वेद में न मिलने वाले 75 मंत्र भी अन्य संहिताओं में मिल जाते हैं। इसलिए इसका अपना कुछ नहीं है।

सामवेद में उपलब्ध ऋग्वेद के मंत्रों के पाठ और ऋग्वेद के संस्मरण में उन्हीं मंत्रों के पाठ में कुछ भिन्नता सी मिलती है। इस पाठ भेद को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि ऋग्वेद का प्राचीनतम पाठ ही सामवेद में लिया गया है। ल्यूडार का कथन है कि सामवेद का पाठभेद आवश्यकतानुसार स्वेच्छाचारिता के आधार पर किया गया होगा।

सामन् का अर्थ है – सुस्वर अथवा लय अथवा जिसमें कोई गाना गाया जाए। इसलिए सामवेद लयों का वेद भी कहा जाता है। इसका पुरोहित उदगाता है। सामवेद में ऋग्वेद के मंत्र उद्गाता पुरोहितों की उपयुक्तता के लिए क्रमबद्ध किए गए हैं।

शाखाएं : ऐसा कहा जाता है कि सभी सामवेद के अनेक संस्करण उपलब्ध थे। पुराण सामवेद के 1000 संस्करणों का उल्लेख करते हैं। सामवेद गान प्रधान है। ऐसा कहा जाता है कि गाते समय लयों के विषय में गायकों में विभिन्नता होती है। इसलिए साम की विकल बहुसंख्यक शाखाएं किसी समय अवश्य थी, लेकिन समय के व्यतीत हो जाने पर देववश उनमें से अधिकांश का लोप इस ढंग से हो गया है कि उनके साम भी विस्मृति के गर्भ में विलीन हो गए। संगीत की विपुलता से यह संख्या ही कल्पित सी प्रतीत नहीं होती। प्रत्युत पुराणों में कहीं भी इन सम्पूर्ण शाखाओं का नामोल्लेख उपलब्ध नहीं होता। अब केवल तीन शाखाएं ही उपलब्ध हैं।

1. **कौथुम शाखा** : इसकी संहिता लोकप्रिय है। इसी की ताण्ड्य नामक शाखा भी मिलती है। जिसका किसी समय विशेष प्रभाव व प्रसार था। शंकराचार्यों ने वेदान्त भाष्य के अनेक स्थलों पर इसका नाम निर्देशन किया है जो इसके गौरव व महत्व का सूचक है। सुप्रसिद्ध छन्दोग्य उपनिषद भी इसी शाखा से संबंधित है। इसका निर्देश शंकराचार्या ने अपने भाष्य में स्पष्ट किया है।

2. **राणायनीय शाखा** : इसकी संहिता भिन्न नहीं है। दोनों केउच्चारण में कहीं–कहीं पार्थक्य उपलब्ध होता है। राणायनिकों की एक आवान्तर शाखा सामग्रि है। जिसकी एक उच्चारण विशेषता भाषा विज्ञान की दृष्टि से नितान्त आलोचनीय है।

3. **जैमिनीय शाखा** : इस शाखा के समग्र अंश ब्राह्मण, श्रोत, गृह्यसूत्र आजकल उपलब्ध हो गए हैं। जैमिनीय शाखा 'नागाराक्षस' में भी लाहौर से प्रकाशित हुई है। जैमिनियों के सामगान कौथुमी से लगभग 1000 अधिक है। **तवलकार शाखा** इसकी आवन्तक शाखा है जिससे लघुकाय परन्तु महत्वशाली केनोपनिषद संबद्ध है। यह तवलकार जैमिनी के शिष्य बताए गए हैं।

3. **वर्ण्य विषय** : सम्पूर्ण सामवेद दो परिच्छेदों में विभक्त है :

1. पूर्वार्चिक 2. उतरार्चिक

इन दोनों परिच्छेदों का उद्देश्य लय संबद्ध शिक्षा देना है। पुरोहित उद्गातृ को लयों की पूर्व शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती थी। यह शिक्षा पुर्वाचिक की सहायता से मिलती थी तथा उत्तरार्चिक के आधार पर मंत्रों को यज्ञों में कंठस्थ करके गाना गाया जाता था। पूर्वाचिक के साथ एक अन्य भाग 'ग्रामगेयगान' से जुड़ा हुआ है। यह दोनों फिर आगे उहगान तथा उह्यगान से जुड़े हुए हैं। इसको हम इस प्रकार से दिखा सकते हैं।

पूर्वाचिक

↓

ग्रामगेयगान अरण्यगेयगान

↓ ↓ ↓ ↓

उहगान उह्यगान उह्यगान उह्यगान

यह ग्राम समूह इस बात को बताने के लिए रखे गए थे कि धार्मिक कृतियों में प्रयोग में लाए जाने वाले सामन् को किस क्रम से प्रयोग में लाया। विद्वान, मंत्र और सामन् का इस प्रकार सम्बन्ध स्थापित करते हैं कि मंत्र से सामन् का उद्गम हुआ। इसलिए प्रत्येक मंत्र एक विशेष सामन् को प्रकट करने वाला होने के कारण योनि कहलाता है अथवा पूर्वाचिक 585 योनियों का संग्रह है।

विभाजन – पूर्वाचिक में सामवेद 6 प्रपाठकों में विभक्त हुआ है। प्रत्येक प्रपाठक आगे दस दशकों में और प्रत्येक दशक आगे 10 मंत्रों में विभक्त है। पूवार्चिक में चार काण्ड हैं, छः प्रपााठक, प्रत्येक प्रपाठक में दो खण्ड हैं। इसको अर्ध भी कहते हैं। प्रत्येक खण्ड में एक दशात ऋचाएं हैं। पूर्वाचिक के प्रथम प्रपाठक को आग्नेय कहते हैं। इसमें अग्नि से सम्बन्धित ऋक् मंत्रों का समावय उपस्थित किया गया है। इस विभाजन में भिन्न देवताओं की प्रशंसा के मंत्र कहे गए हैं। उनके अनुसार ही अलंकार क्रमपूर्वक रखे गए हैं। जैसे पहले 12 दशकों में अग्नि की प्रार्थनाएं हैं। मध्य के 36 दशकों में अधिकतर इन्द्र की प्रशंसा की प्रार्थनाएं हैं तथा शेष दशकों में सोम की प्राथनाएं है। सोमविषयक ऋचाएं भी पंचम अध्याय में संग्रहीत की गई है, वह पवमान पर्व के नाम से जाना जाता है। चतुर्थ आरण्यक काण्ड में संग्रहित ऋचाएं आरण्यक में ही गाई जाती हैं। इनका संकलन षष्ठम् अध्यय में है।
उत्तरार्चिक – इस भाग में तीन–तीन मंत्रों के आधार पर 400 गानों का संग्रह है। जिसमें महासूत्रों में स्त्रोतों के रूप में गान की प्रथा थी। पूर्वाचिक में जहां पदों अथवा सूक्तों को छन्द अथवा देवता के अनुसार संकलित किया है। वहां उत्तरार्चिक में तत्सबद्ध मुख्य–अमुख्य स्त्रोतों की प्रमुख सूत्रों के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार 3 या 3 से अधिक पदों का स्त्रोत उतरार्चिक में निर्दिष्ट किसी एक ही लय के अनुसार गाया जा सकता है। उत्तरार्चिक एक ऐसा गीत संग्रह है जिसमें प्रत्येक गीत का पूर्ण रूप दिया गया है, जबकि उस गीता का लय संकेत पूर्वार्चिक में पहले दिया जा चुका है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उत्तरार्चिक, पूर्वार्चिक में अनन्तर स्थापित हुआ।

सामवेद के उत्तरार्चिक में 9 प्रपाठक और 21 अध्याय हैं। पूर्वार्चिक के कुछ मंत्र उत्तरार्चिक में पुनः उल्लिखित किए गए हैं। प्रत्येक 4 प्रपाठक आगे 2 या 3 परिच्छेदों में और यह परिच्छेद आगे 3 अथवा 3 से अधिक परस्पर सम्बन्धित मंत्रों में विभक्त हुआ है। सामवेद के प्रतिपाद्य विषय के रूप में उपासना उपलब्ध है। इसमें सोम, सोम रस, सोम पान, सोम याग का विशेष महत्व है। आध्यात्मिक दृष्टि से सोम ब्रह्म या शिव तत्व है। सामवेद संगीत एवं भक्ति द्वारा उसकी प्राप्ति का साधन है। कुछ विद्वानों के द्वारा यह स्वीकार किया जाना कि सामवेद की सभी ऋचाएं स्वतंत्र न होकर ऋग्वेद से गान के निमित्त ग्रहण की गई यह धारणा नितान्त भ्रान्त है। इसके विपरीत साम संहिता में ऐसे अनेक मंत्र हैं जिन पर गान नहीं। अतः यह सर्वथा सिद्ध हो जाता है कि साम संहिता के मंत्र ऋग्वेद से उधार नहीं लिए गए। प्रत्युत स्वतंत्र हैं, उतने ही प्राचीन हैं, जितने ऋग्वेद के।

सामगान पद्धति – सामवेद में उपलब्ध साममंत्रों का आश्रय लेकर ऋषियों ने गान मन्त्रों का विधान किया। यह गान चार प्रकार का है –

1. प्राकृतिक गान 2. आरण्यक गान

3. ऊहगान 4. उह्यगान

वास्तव में सामगान पद्धति बहुत कठिन है। गायन के स्वरों का विशेष ध्यान रखा जाता है। पूर्ण जानकारी के लिए सूक्ष्म अध्ययन अपेक्षित होता है।

सामगान के पांच भाग :

1. **प्रस्ताव गान –** यह मंत्र का आरम्भिक भाग है। जो 'हूं' से आरम्भ होता है।

2. **उद्गीथ –** इस साम का प्रधान उद्गाता कहते हैं। इसके आरम्भ में ओ३म् लगाया है।

3. **प्रतिहार –** इसका अर्थ दो को जोड़ने वाला है। इसे प्रतिहर्ता नामक ऋत्विज् गाता है।

4. **उपद्रव –** यह प्रतिहार का उपभेद है। इसका पुरोहित उद्गाता होता है।

5. **विधान –** इसमें प्रस्तोता, उद्गाता, प्रतिहर्ता एक साथ मिलकर गान करते हैं। सामवेदीय मंत्रों के ऊपर एक, दो, तीन अंक क्रमशः उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित है सामगान में साम ऋचाओं के अनुकूल शाब्दिक परिवर्तन कर लिया जाता है। जिसे साम विकार कहते हैं। यह विकार छः प्रकार के हैं :

1. विकार 2. विश्लेषण

3. विकर्षण 4. अभ्यास

5. विराम 6. स्तोम

निष्कर्ष स्वरूप इस संहिता का मूल्यांकन करते हुए हम यह कह सकते हैं कि सामवेद संहिता यज्ञ तथा इन्द्रजाल की दृष्टि से भारतीय इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। संगीत की दृष्टि से गीति तत्व का उद्‌गम स्थान यही है। परन्तु साहित्यिक दृष्टि से इसका कोई विशेष महत्व नहीं है।